पाठ 7

इसमें क्या शक है

राजा के पास एक आदमी आया। उसके पास एक तोता था। उसने राजा को तोता दिखाया और कहा– महाराज, यह बड़ा होशियार तोता है। आपसे बात भी कर सकता है।

राजा ने तोते को देखा और तोते से पूछा–अच्छा! तो तुम बात भी कर सकते हो ?

तोता – इसमें क्या शक है ?
राजा प्रसन्न हुआ और तोते को महल में ले आया।

एक दिन राजा ने तोते से पूछा– क्या मैं एक अच्छा राजा हूँ ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – मेरी प्रजा मुझसे प्रेम करती है ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – क्या मेरा कोई शत्रु भी है ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – तुम उसे जानते हो ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – उसका नाम बताओगे ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – बताओ ना !

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – बताओ भी !

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – क्या एक ही रट लगा रखी है ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – बेवकूफ हो क्या ?

तोता – इसमें क्या शक है ?

राजा – तो मैं ही बेवकूफ था, जो तुम्हें खरीद कर लाया !

तोता – इसमें क्या शक है ?

अभ्यास

1. बताओ–

   क. तोते वाले आदमी ने राजा से क्या कहा ?

   ख. तोते ने राजा के हर प्रश्न का क्या उत्तर दिया ?

   ग. राजा ने तोते को बेवकूफ क्यों कहा ?

2. 'राजा उधर से जा रहा था', 'राजा उधर से जा रहा है', 'राजा उधर से जाएगा'। इस उदाहरण की तरह ही नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करो–

   मोहन अमरूद ....। मरियम गाना ....।

   मोहन अमरूद ....। मरियम गाना ....।

   मोहन अमरूद ....। मरियम गाना ....।

3. 'भाई लड्डू खाता है'। 'बहन लड्डू खाती है'। नीचे दिए गए शब्दों में इसी प्रकार 'लड्डू खाता है', 'लड्डू खाती है' का प्रयोग करो'

   राजा .... माँ ....

   रानी .... सलीम ....

4. 'इसमें क्या शक है'– कुछ लोग बात करते समय एक ही बात का बार–बार प्रयोग करते हैं। क्या तुमने भी ऐसा कोई वाक्य सुना है? उसे लिखो।

5. अनावश्यक शब्द ढूँढ़ो–

कभी-कभी हम बात करते हुए ऐसे शब्द बोल देते हैं, जिनकी वाक्य में कोई आवश्यकता नहीं होती है। नीचे दिए गए वाक्यों में भी कुछ शब्द अनावश्यक हैं। उन्हें ढूँढ़कर अलग करो–

- बाजार से एक पका पीला पपीता लाना।
- अरे! शरबत में इतनी सारी ठंडी बर्फ क्यों डाल दी?
- खेत से हरा ताजा पालक ले आना।

इस पाठ में बच्चों से 'लिंग' तथा 'काल' पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। बच्चों को विभिन्न उदाहरणों द्वारा 'लिंग' तथा 'काल' का अभ्यास कराएँ।

अपने आप –1

खरगोश और हाथी

जंगल में हाथियों का झुंड रहता था। एक बार पानी नहीं बरसा। तालाब और नदी–नाले सूख गए। दूर जंगल में एक बड़ा तालाब था। वह सदा पानी से भरा रहता था। हाथी उस तालाब की ओर चले गए।

तालाब के चारों ओर खरगोश बिल बनाकर रहते थे। हाथियों के पैरों के नीचे आकर बिल दब गए और कुछ खरगोश मारे गए।

एक खरगोश ने कहा, "चलो यहाँ से कहीं और चलें।" तब कुछ साथी बोले, "यह हमारी भूमि है। हम भय से इसको छोड़कर नहीं जा सकते। कुछ ऐसा काम करें कि हाथी इस ओर न आएँ।"

लम्बकर्ण नाम के एक खरगोश ने कहा, "आप सब चिन्ता न करें। मैं ऐसा उपाय करूँगा कि हाथी यहाँ से चले जाएँगे।"

दूसरे दिन शाम को जब हाथी तालाब के पास आए तो लम्बकर्ण ने ऊँची आवाज में कहा, "अरे हाथियों ! इस तालाब के स्वामी चन्द्रमा हैं। वह तुमसे बहुत नाराज हैं। आज से तुम इस तालाब पर मत आना।"

हाथियों के राजा ने कहा, "चंद्रमा हमसे क्यों नाराज हैं? वे यहाँ कहाँ हैं?"

लम्बकर्ण बोला, "तुम्हारे पैरों से दबकर बहुत से खरगोश मारे गए हैं। वे सब चन्द्रमा की प्रजा हैं, इसलिए चन्द्र देव तुमसे बहुत नाराज हैं। वे इस समय तालाब में उतरे हैं। तुम उनके दर्शन करना चाहते हो तो मेरे साथ चलो।"

लम्बकर्ण हाथियों के राजा को तालाब के किनारे ले गया और उसे पानी में चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाया। हाथियों का राजा भयभीत हो गया। वह हाथियों के झुंड के साथ वहाँ से दूसरी जगह चला गया और खरगोश आनंद से रहने लगे।

बच्चे पाठ का स्वयं अध्ययन करें। बच्चों को इस प्रकार की और भी कहानियाँ पढ़वाएँ।